प्रार्थनाएँ और पवित्र लेख

बहाई प्रार्थनाओं और पवित्र लेखों का संकलन

बहाई उपासना मंदिर
बहापुर, कालकाजी, नई दिल्ली; 110019

स्वयं को मेरी वाणि के महासिंधु में निमग्न
कर लो, ताकि तुम उसके रहस्यों को
उजागर कर सको, और उसके गहराइयों
में छिपे हुए मणिमुक्ताओं को खोज पाओ.

- बहाउल्लाह

प्रार्थना

मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है। जिस प्रकार हमारे शरीर को सही तरह से विकसित होने के लिए पोषण की आवश्यकता होती है उसी प्रकार हमें अपनी आध्यात्मिक जीविका और स्वास्थ्य के लिए नियमित प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना आत्मा के लिए भोजन है; इससे हमारे हृदयों में ईश्वर का प्रेम और गहरा होता जाता है और हम ईश्वर के करीब आते हैं। बहाई पवित्र लेखों का कहना है "अस्तित्व के संसार में प्रार्थना से अधिक मधुर कुछ भी नहीं है...प्रार्थना और अनुनय की स्थिति सबसे आशीर्वादित स्थिति है...यह आध्यात्मिकता का सृजन करती है, हमें सजग बनाती है और हमारे मन में पावन भाव सृजित करती है, ईश्वरीय साम्राज्य के प्रति नए आकर्षण उत्पन्न करती है तथा उच्च स्तर के बुद्धिकौशल की ग्रहणशीलता प्रदान करती है।" प्रार्थना की अवस्था में रहने के लिए हमें भक्ति के दौरान न सिर्फ पवित्र श्लोकों का उच्चारण करना है; अपितु पूरा दिन हमें अपने हृदय को ईश्वर की ओर अभिमुख करना चाहिए।

प्रार्थना की सर्वोच्च स्थिति में मनुष्य ईश्वर के प्रति अपने प्रेम का एक शुद्ध अभिव्यक्ति करता है। "सच्चे उपासक को, ईश्वर से प्रार्थना करते समय उसे ईश्वर से अपनी इच्छाओं और कामनाओं को पूरा करने के लिए इतना प्रयत्न नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें समायोजित करने और उन्हें परमात्मा की इच्छा के अनुरूप बनाने

के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। सिर्फ इस तरह के रवैए से ही कोई उपासक मन की शान्ति और संतोष की अनुभुति प्राप्त कर सकता है जो केवल प्रार्थना की शक्ति ही प्रदान कर सकती है।" फिर भी यह स्वाभाविक है कि हम अक्सर भगवान से सहायता मांगने के लिए उनसे प्रार्थना और अनुनय करते है। इस तरह की प्रार्थना के बाद हमें उस पर मनन करना है और आगे उसके अनुसार कार्य करना है जो सबसे अच्छा उपाय है और फिर देखें कि क्या हमारे प्रयासों की पुष्टि होती है। हमें ईश्वर की दया पर पूरा भरोसा होना चाहिए और निश्चित होना चाहिए कि वह हमें अनुदान देगा जो हमारे लिए सबसे अच्छा है ।

विषय

अनिवार्य प्रार्थनाएँ

लघु अनिवार्य प्रार्थना 1

सामान्य प्रार्थनाएँ

सहायता 2

बच्चों के लिए 4

प्रभात 5

सायंकाल 6

दिवंगत के लिए 7

क्षमा याचना 8

आरोग्य 8

शिशुओं के लिए 9

प्रातःकाल 9

स्तुति और कृतज्ञता 10

आध्यात्मिक विकास 12

दृढ़ता 13

एकता 15

युवाओं के लिए 17

परेशानी और कठिनाई 17

बहाउल्लाह के निगूढ़ वचन से 19

बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से 22

अब्दुल-बहा के लेखों से संकलन 25

अनिवार्य प्रार्थनाएँ

(बहाउल्लाह द्वारा प्रकट की गई दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाएँ संख्या में तीन है, प्रत्येक बहाई को चाहिए कि इनमें से कोई एक प्रार्थना को वह चुन ले और अनिवार्य रूप से उसका पाठ प्रतिदिन करे. अनिवार्य प्रार्थना का पाठ उनके साथ दिए गये विशेष निर्देशों के अनुसार ही क्या जाना चाहिए।
"अनिवार्य प्रार्थनाओं के सदंर्भ में सुबह दोपहर और संध्या का अर्थ है सूर्योदय से दोपहर तक, दोपहर से सूर्यास्त तक, और सूर्यास्त से लेकर सूर्यास्त के दो घंटे पश्चात तक का समय।")

लघु अनिवार्य प्रार्थना

(चौबीस घंटे में एक बार, दोपहर से संध्या के बीच इस प्रार्थना का पाठ करना चाहिये।)

मैं साक्षी हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि तुझे जानने तथा तेरी आराधना करने हेतु तूने मुझे उत्पन्न किया है| मैं इस क्षण अपनी शक्तिहीनता और तेरी शक्तिमानता, अपनी दरिद्रता तथा तेरी सम्पन्नता का साक्षी हूँ। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू ही है सकंट में सहायक, स्वःनिर्भर।

-बहाउल्लाह

सामान्य प्रार्थनाएँ

सहायता

हे तू, जिसका मुखड़ा मेरी आराधना का लक्ष्य है, जिसका सौन्दर्य मेरा अभयस्थल है, जिसका आवास मेरा ध्येय है, जिसकी स्तुति मेरी आशा है, जिसका मंगल विधान मेरा सहचर है, जिसका प्रेम मेरे अस्तित्व का कारण है, जिसका स्मरण मेरी आशा है, जिसकी निकटता मेरी इच्छा है, जिसकी समीपता मेरी सर्वाधिक प्रिय इच्छा और सर्वोच्च आकांक्षा है। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे उन वस्तुओं से वंचित न कर, जिसका विधान तूने अपने चुने हुए सेवकों के लिये किया है। अतः, मुझे इहलोक और परलोक का शुभ प्रदान कर। सत्यतः, तू ही, समस्त मानवजाति का सम्राट है। तू सदा क्षमाशील, परम उदार है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है !

-बहाउल्लाह

हे ईश्वर! हम दयनीय हैं, हमें अपनी दया का दान दे। हम दरिद्र हैं, अपनी सम्पदा के महासागर से हमें एक अंश प्रदान कर; हम अभावग्रस्त हैं, हमारी आवश्यकता पूरी कर; हम पतित है, अपनी महिमा प्रदान कर। नभचर के पक्षी और धरती के पशु प्रतिदिन अपना आहार तुझसे ही प्राप्त करते हैं, और सभी प्राणी तेरी सार-सम्भाल और प्रेमपूर्ण कृपालुता का भाग पाते हैं।

इस निर्बल को अपनी अलौकिक कृपा से वंचित न कर और इस असहाय आत्मा को अपनी शक्ति के द्वारा अपनी अक्षय सम्पदाओं का दान दे।

हमें हमारा नित्य-प्रति का आहार प्रदान कर और हमारे जीवन की आवश्यकताओं को अपनी ऋद्धि-सिद्धि का दान दे, जिससे हम तेरे सिवा अन्य किसी पर निर्भर न रहें, पूर्णतया तेरे ही स्मरण में लीन रहें, तेरे पथ पर चलें, और तेरे रहस्यों को उजागर करें। तू सर्वशक्तिमान, सबको प्रेम करने वाला और मानवजाति का पालनहार है।

-अब्दुल-बहा

बच्चों के लिए

हे ईश्वर! इन बच्चों को शिक्षित कर। ये बच्चे तेरी फलों की बगिया के पौधे हैं, तेरे तृणभूमि के फूल हैं, तेरी वाटिका के गुलाब हैं। अपनी वर्षा की फुहारें उन पर पड़ने दे, सत्य के इस सूर्य को अपने स्नेह सहित इन पर जगमगाने दे। अपने समीर को उनमें ताजगी भरने दे, ताकि ये प्रशिक्षित हो सकें, विकास और वृद्धि कर सके, और परम सौन्दर्य में परिलक्षित हो सकें। तू दाता है। तू करुणामय है।

-अब्दुल-बहा

हे ईश्वर! मेरा मार्गदर्शन कर, मेरी रक्षा कर, मुझे एक दीप्तिमान दीप और देदीप्यमान सितारा बना दे। तू शक्तिशाली एवं बलशाली है।

-अब्दुल-बहा

प्रभात

हे मेरे ईश्वर और मेरे स्वामी! मैं तेरा सेवक और तेरे सेवक का पुत्र हूँ। इस प्रभात बेला में मैं अपनी शय्या से जाग उठा हूँ, जब तेरी एकमेवता का दिवानक्षत्र, उसके अनुसार जो तेरे आदेश की पुस्तकों में विहित किया गया है तेरी इच्छा के उद्गमस्थल से चमक उठा है और समस्त जगत पर अपनी प्रभा बिखेरी है। स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, कि हम तेरे ज्ञान के आलोकपुंज के प्रति जाग उठे हैं। हमारे लिये वह भेज, हे मेरे स्वामी! जो हमें इस योग्य बना दे कि हम तेरे सिवा अन्य सभी से अनासक्त हो सकें, जो हमें तेरे सिवा सभी आसक्तियों से मुक्त होने में समर्थ बनाये। मेरे लिये और जो मेरे प्रियजनों के लिए, स्त्री-पुरुष सभी के लिये समान रूप से, इहलोक और परलोक के शुभ और कल्याण का विधान कर। अपने अचूक संरक्षण के द्वारा हमें उन सबसे सुरक्षित रख जिन्हें तूने आसुरी प्रवृत्तियों का मूर्तरूप बनाया है, हे तू सम्पूर्ण सृष्टि के परमप्रिय और सम्पूर्ण विश्व की कामना! तू जो चाहे करने में समर्थ है। तू सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, संकटमोचन स्वयमाधार है। हे स्वामी, मेरे ईश्वर! उसे आशीष दे, जिसे तूने अपनी परम श्रेष्ठ उपाधियों के साथ भेजा है और जिसके द्वारा तूने सदाचारियों और दुष्टों को विभक्त

किया है, और मुझे अनुग्रहपूर्वक वह करने में सहायता दे जिसे तू प्रेम करता है और जिसकी तू इच्छा करता है। इसके अतिरिक्त हे मेरे ईश्वर उनको आशीष दे जो तेरे शब्द और तेरे अक्षर है और वे जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं, और जो तेरी मुखमण्डल की ओर प्रवृत्त हो गये हैं, और तेरे आह्वान को सुना है। तू सत्य ही, समस्त जनों का स्वामी और सम्राट है, और समस्त वस्तुओं पर सामर्थ्यवान है।

-बहाउल्लाह

सायंकाल

हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी, मेरी आकांक्षा के लक्ष्य! तेरा यह सेवक, तेरी दया के आश्रय में और तेरी सुरक्षा तथा तेरे संरक्षण की चाह में सोना चाहता है, तेरी कृपा की छत्रछाया तले विश्राम करना चाहता हैं।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे स्वामी, तेरा नेत्र जो कभी सोता नहीं है, मेरे नेत्र को अपने अतिरिक्त अन्य कुछ भी देखने से बचा। मेरी दृष्टि को इतना सशक्त बना कि ये तेरे चिन्हों को देख सकें और तेरे प्रकटीकरण के क्षितिज का अवलोकन करें। तू वह है जिसकी शक्तिमानता की

अभिव्यक्ति के समक्ष शक्ति का सार भी प्रकम्पित हो उठा है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू ही है सर्वशक्तिमान, सर्ववशकारी और अप्रतिबंधित।

-बहाउल्लाह

दिवंगत के लिए

हे मेरे ईश्वर! हे तू पापों को क्षमा करने वाले, उपहारों के प्रदाता, व्याधियों को दूर करने वाले!सत्य ही, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू उनके पापों को क्षमा कर दे जो इस भौतिक परिधान को त्याग कर आध्यात्मिक लोक में आरोहण कर गये हैं। हे मेरे स्वामी! उन्हें सीमा के उल्लंघनों से पवित्र कर दे, उनके दुःखों को दूर कर दे, और उनके अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित कर दे। उन्हें आनन्द उद्यान में प्रवेश करा, परम पावन जल से उन्हें स्वच्छ कर दे, और उन्हें अनुमति दे कि वे उच्चतम पर्वत पर तेरी भव्यताओं के दर्शन कर सकें।

-अब्दुल-बहा

क्षमा याचना

हे स्वामी, तेरी स्तुति हो। हमारे अपने पापों को क्षमा कर दे, हम पर दया कर और अपने पास वापस लौटने में हमारी सहायता कर। हमें, अपने अतिरिक्त किसी अन्य पर भरोसा न करने दे और अपनी उदारता के माध्यम से, कृपापूर्वक हमें वह प्रदान कर जो तुझे प्रिय है, जो तेरी इच्छा हो और जो तेरे योग्य हो। उसके पद को उदात्त कर जिसने तुझमें सच्चा विश्वास किया है, तथा अपनी कृपापूर्ण क्षमाशीलता माध्यम से उन्हें क्षमा कर। वस्तुतः तू संकट में सहायक, स्वः-निर्भर है।

-बाब

आरोग्य

तेरा नाम ही मेरा आरोग्य है, हे मेरे ईश्वर, और तेरा स्मरण ही मेरी औषधि है। तेरा सामीप्य ही मेरी आशा, और तेरा प्रेम ही मेरा सहचर है। मुझ पर तेरी दया ही मेरी निरोगता और इहलोक तथा परलोक दोनों में मेरी सहायक है। सत्य हीः, तू ही है सर्वउदार, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।

-बहाउल्लाह

शिशुओं के लिए

हे ईश्वर! मेरे स्वामी! मैं छोटी उम्र का बालक हूँ, अपनी दया के दुग्ध से मेरा पोषण कर, अपने प्रेम के वक्ष से मुझे प्रशिक्षण दे, अपने मार्गदर्शन की पाठशाला में मुझे शिक्षित कर और अपने आशीष की छत्रछाया में मेरा विकास कर। मुझे अंधकार से मुक्ति दे, मुझे एक दीप्त प्रकाशपुंज बना दे; मुझे उदासी से छुटकारा दिला; मुझे अपनी गुलाब वाटिका का एक पुष्प बना; मुझे अपनी पावन देहरी का एक सेवक बना और मुझे सदाचारियों की वृत्ति और स्वभाव प्रदान कर; मुझे मानव संसार के लिये सम्पदाओं का एक माध्यम बना और मेरे मस्तक को शाश्वत जीवन के मुकुट से सुशोभित कर। तू निश्चय ही शक्तिशाली, सामर्थ्यवान, सर्वद्दष्टा और सबका सुनने वाला है !

-अब्दुल-बहा

प्रातःकाल

हे मेरे ईश्वर! मैं तेरी कृपा से इस प्रभात वेला में जाग उठा हूँ, और तुझ में ही अपना सम्पूर्ण विश्वास अर्पित कर अपना निवास छोड़ा है और स्वयं को तेरे संरक्षण में सौंप दिया है। अपनी दया के आकाश से तू मुझ पर अपने आशीष भेज और मुझे अपने घर सुरक्षित लौटने में वैसे ही समर्थ बना,

जैसे तूने मुझे घर से प्रस्थान करते समय, अपनी सुरक्षा में रखकर, अपनी ओर उन्मुख होने के योग्य बनाया है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, एक और केवल एक, अतुलनीय, सर्वज्ञ तथा सर्वप्रज्ञ।

-बहाउल्लाह

स्तुति और कृतज्ञता

स्तुति हो तेरे नाम की, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! तू वह है जिसकी सभी वस्तुएँ आराधना करती हैं, जो किसी की भी आराधना नहीं करता, जो सबका स्वामी है, जो किसी के अधीन नहीं है, जो सबका ज्ञाता है और जो किसी को भी ज्ञात नहीं है। तूने मनुष्यों के मध्य अपनी पहचान करानी चाही थी, इसलिये अपने मुख से निकले एक शब्द से, तूने सृष्टि को अस्तित्व दिया था, ब्रह्माण्ड को स्वरूप दिया था। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, स्वरूपदाता, सृष्टा, सामर्थ्यवान, सर्वशक्तिवान्। तेरी इच्छा के क्षितिज पर प्रकाशमान इस एक शब्द के माध्यम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि मुझे उस जीवन-जल को ग्रहण करने के योग्य बना जिसके द्वारा तूने अपने प्रियजनों के हृदयों को अनुप्रणित और आत्माओं को चैतन्य किया है; ताकि मैं

हर समय प्रत्येक परिस्थिति में पूर्णतया तेरी ही ओर उन्मुख रहूँ। तू शक्ति, महिमा और कृपा का ईश्वर है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू सर्वोच्च शासक, महिमावंत, सर्वदर्शी है ।

-बहाउल्लाह

सर्वस्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर! तू, जो समस्त महिमा और भव्यता, महानता और गौरव, सम्प्रभुता और साम्राज्य, उच्चता और कृपालुता, विस्मय और शक्ति का स्रोत है। जिसे तू चाहता है उसे अपने परम महान सिंधु को स्वीकारने का सौभाग्य प्रदान करता है। और जिसे तू चाहता है उसे अपने परम महान नाम को स्वीकारने का सौभाग्य प्रदान करता है। आकाश और धरती के समस्त वासियों में से कोई भी तेरे तेरी सम्प्रभु इच्छा को पूरा होने से रोक नहीं सकता। अनादिकाल से तूने सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन किया है और करता रहेगा तेरा ही अधिपत्य सदा समस्त सृजित वस्तुओं पर है। सर्वसामर्थ्यवान, परम उदात्त सर्वशक्तिशाली सर्वप्रज्ञ के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

हे स्वामी! अपने सेवकों के मुखड़ों को दीप्त कर दे और उनके हृदय को निर्मल कर दे कि वे तेरे दिव्य अनुग्रहों की ओर उन्मुख हो सकें और पहचान सकें उसे जो तेरा और तेरे

दिव्य सारतत्व का उद्गमस्थल है। वस्तुतः, तू ही समस्त लोकों का स्वामी है! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, अबाधित, सर्ववशकारी।

- बहाउल्लाह

आध्यात्मिक विकास

हे मेरे ईश्वर, मुझमें एक शुद्ध हृदय का सृजन कर, और मुझमें एक प्रशांत अंतःकरण का नवीनीकरण कर, हे मेरी आशा! अपनी शक्ति की चेतना से मुझे अपने धर्म में दृढ़ कर, हे मेरे परम प्रियतम, अपनी महिमा के प्रकाश से मेरे समक्ष अपना पथ आलोकित कर, हे तू, मेरी आकांक्षा के लक्ष्य! अपनी सर्वातीत शक्ति से अपनी पावनता के आकाश तक मुझे ऊपर उठा, हे मेरे अस्तित्व के स्रोत और अपनी शाश्वतता के समीरों से मुझे आनन्दित कर दे, हे तू, जो मेरा ईश्वर है! अपने अनन्त स्वर माधुर्य से मुझे प्रशांति प्रदान कर, हे मेरे सखा, और तेरे पुरातन स्वरूप की सम्पदा मुझे तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से विमुक्त कर दे, हे मेरे स्वामी! और तेरे अविनाशी सार की अभिव्यक्ति के सुसामाचार से मुझे आह्लादित कर दे, हे तू जो प्रकटों में परम प्रकट और निगूढ़ों में परम निगूढ़ है!

-बहाउल्लाह

हे ईश्वर! मेरे परमेश्वर! यह तेरा सेवक तेरी ओर बढ़ चला है। तेरी सेवा के पथ में विचरण कर रहा है। तेरी अक्षय सम्पदाओं की आशा करते हुए, तेरे साम्राज्य पर भरोसा रखे हुए, और तेरे वरदानों की मदिरा से मदमस्त होकर, तेरे प्रेम के मरुस्थल में भावना के उन्माद में भटक रहा है, तेरे अनुग्रहों की अपेक्षा रखे हुए। हे मेरे ईश्वर! तेरे प्रति अनुराग की उसकी प्रचंडता को, तेरी स्तुति की इस निरंतरता को और तेरे प्रति प्रेम की प्रखरता को बढ़ा दे।

निश्चय ही तू परम उदार भरपूर कृपा का प्रभु है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। क्षमाशील, दयामय ।

-अब्दुल-बहा

दृढ़ता

हे स्वामी, मेरे ईश्वर्! अपने प्रियजनों को अपने धर्म में अडिग रहने, अपने पथ पर चलने, ईश्वर के धर्म में दृढ़ रहने में सहायता दे। उन्हें अपनी कृपा प्रदान कर कि वे अहंकार और वासना के आघातों को सह सकें और तेरे दिव्य मार्गदर्शन का अनुसरण कर सके। तू शक्तिशाली, कृपालु, स्वनिर्भर, उदात्त, करुणामय, सर्वसमर्थ, सर्वदयालु है।

-अब्दुल-बहा

स्तुत्य और महिमावंत है तू, हे परमात्मन्! तेरा पावन सान्निध्य प्राप्त करने का दिवस शीघ्र आये, ऐसा वर दे। अपने प्रेम और प्रसन्नता की शक्ति से हमारे हृदय उल्लसित कर दे और हम स्वेच्छा से तेरी इच्छा और आदेश के प्रति समर्पित हो सकें, ऐसी दृढ़ता प्रदान कर। वस्तुतः तेरे ज्ञान के वृत्त में वे सब हैं, जिनकी रचना तूने की है और जिनकी रचना तू करेगा। तेरी स्वर्गिक शक्ति उन सब के अनुभव से परे है, जिनको तूने अस्तित्व दिया है और जिन्हें तू अस्तित्व देगा। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है, जिसकी आराधना की मेरी कामना है। तेरे अतिरिक्त अन्य नहीं है कोई, जो स्तुत्य है। तेरी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त नहीं है कुछ भी जो प्रिय है मुझे। वस्तुतः; तू ही है सर्वोपरि शासक, परम् सत्य, संकटमोचन, स्वयंजीवी।

-बाब

एकता

हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर! अपने सेवकों के हृदयों को एक कर दे और उन पर अपना महान उद्देश्य प्रकट कर। जिससे वे तेरे आदेशों का अनुपालन करें और तेरे नियमों पर अटल रहें। हे ईश्वर! तू उनके प्रयासों में उनकी सहायता कर और उन्हें अपनी सेवा करने की शक्ति प्रदान कर। हे ईश्वर! उन्हें उनके ऊपर न छोड़; उनके पगों का, अपने ज्ञान के प्रकाश द्वारा मार्गदर्शन कर और उनके हृदयों को अपने प्रेम से आनंदित कर दे। सत्य ही, तू उनका सहायक और उनका स्वामी है।

-बहाउल्लाह

हे दयालु ईश्वर! तूने समस्त मानवजाति को एक ही मूल कुटुम्ब से उत्पन्न किया है। तूने ऐसा निश्चित किया है कि सभी मनुष्य एक ही कुटुम्बी हैं। तेरे पवित्र सान्निध्य में सब तेरे ही सेवक हैं और समस्त मानवजाति तेरी ही छत्रछाया में आश्रित है। सब तेरी उदारताओं के सहभोज में एकत्रित हैं। सब तेरे मंगल विधान की ज्योति से प्रकाशित हैं।
हे ईश्वर्! तू सब पर कृपालु है, तूने सबको आजीविका दी है, सबको आश्रय दिया है, सबको जीवन प्रदान किया है; तूने

सबको प्रतिभा और गुणों से सम्पन्न किया है; सब तेरी कृपा के महासागर में निमग्न हैं। हे तू दयालु स्वामी ! सबको एक कर दे। धर्मो को सहमत होने दे, राष्ट्रों को एक राष्ट्र बना दे, ताकि वे सब परस्पर एक-दूसरे को, एक ही परिवार के सदस्यों की भाँति देखें और सम्पूर्ण वसुधा को एक ही कुटुम्ब मानें। वे सब मिलकर सद्भाव के वातावरण में रहें। हे ईश्वर! मानवजाति की एकता का ध्वजा उन्नत कर दे। हे ईश्वर! परम् महान शांति स्थापित कर। सबके हृदयों को मिलाकर एक कर दे। हे तू दयालु पिता, हे ईश्वर, अपनी स्नेह-सुरभि से हमारे हृदयों को उल्लास से भर दे। अपने मार्गदर्शन के प्रकाश द्वारा हमारे नेत्रों को प्रदीप्त कर। अपने शब्दों के स्वरमाधुर्य से हमारे कानों को झंकृत कर दे और अपने मंगल विधान के संरक्षण के दुर्ग में आश्रय प्रदान कर। तू सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान्, क्षमावंत, मानवजाति की दोषों को अनदेखा करने वाला है।

-अब्दुल-बहा

युवाओं के लिए

हे स्वामी, इस युवा को दीप्तिमान बना और इस अकिंचन प्राणी को अपनी उदारता प्रदान कर। इसे ज्ञान प्रदान कर, प्रत्येक प्रभात के साथ इसे शक्ति दे और अपने संरक्षण के आश्रय में इसे सुरक्षा दे ताकि यह भूल से मुक्त हो सके, स्वयं को तेरे धर्म की सेवा में समर्पित करे, पथभ्रष्टों का मार्गदर्शन कर सके, अभागों को राह दिखा सके, दासों को मुक्त कर सके और असावधानों को जगा सके। जिससे सभी तेरे स्मरण और स्तुति से धन्य हो सके। तू शक्तिशाली और शक्तिसम्पन्न है।

-अब्दुल-बहा

परेशानी और कठिनाई

जो तेरे समीप हैं उनके लिये कठिनाइयाँ रोग-निवारक औषधि हैं, जो तुझे चाहते हैं उनकी बस यही एक कामना है कि तू उन्हें मुक्ति दे, जो तुझे पाना चाहते हैं उनके हृदय तेरी परीक्षाओं के लिये तरसते हैं, जिन्होंने तेरे सत्य को जान लिया है उनके लिये आशा की बस एक किरण है तेरा निर्णय। तेरा दिव्य माधुर्य और तेरे मुखमंडल की महिमा के नाम पर मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपने उच्च साम्राज्य

से हमारे लिये वह भेज जो तेरे समीप आने में हमें समर्थ बनाये। हे मेरे ईश्वर, अपने धर्म में मुझे दृढ बना, अपने ज्ञान के प्रकाश से हमारे हृदयों को आलोकित कर दे और अपने नाम की चमक से हमारे मन-प्राण दीप्त कर दे।

-अब्दुल-बहा

बहाउल्लाह के निगूढ़ वचन से

हे अस्तित्व के पुत्र!
तेरा स्वर्ग मेरा प्रेम है, तेरा स्वार्गिक आवास, मुझसे तेरा पुनर्मिलन । उसमें प्रवेश कर और विलम्ब न कर। यह वह है जो तेरे लिए हमारे उच्च लोक में और हमारे उदात्त साम्राज्य के लिए नियत किया गया है।

हे चेतना के पुत्र!
मुझसे वह न मांग जिसे हम तेरे लिए नहीं चाहते। तब तेरे हित हमने जो आदेशित किया है, उस पर संतोष कर, क्योंकि यही तेरे लिए लाभप्रद होगा, अगर तू उससे स्वयं को संतुष्ट कर ले।

हे मनुष्य के पुत्र!
जब तक तू स्वयं पाप कर्मा में लिप्त है, दुसरो के पापों को व्यक्त न कर। यदि तूने इस आज्ञा की अवलेहना की तो तू शापित हो जाएगा और इसका साक्षी मै हूँ।

हे मनुष्य के पुत्र!
मेरा कोई सेवक यदि तुझसे कुछ मांगे तो देने से इन्कार न कर, क्योंकि उसका मुखड़ा मेरा मुखड़ा है; ऐसा कर तू मेरे समक्ष लज्जित होगा।

हे अस्तित्व के पुत्र!
अंतिम लेखा जोखा हो उससे पहले तू प्रतिदिन अपने कर्मो का निरिक्षण कर लिया कर, क्योंकि मृत्यु का आगमन आघोषित होगा और तुझे अपने कर्मो का विवरण प्रस्तुत करने को कहा जाएगा।

हे सर्वोच्च के पुत्र!
मैंने मृत्यु को तेरे लिए आनन्द का संदेशवाहक बनाया हैं। फिर तू दुःख क्यों करता है? मैंने प्रकाश को तुझ पर तेज डालने हेतु रचा है। तू स्वयं को उससे छिपाता क्यों है ?

हे धूल के गतिमान स्वरुप!
मैं तुझसे घनिष्टता की इच्छा रखता हूँ, परन्तु तुझे मुझ पर भरोसा कहाँ है। तेरे विद्रोह की तलवार ने तेरी आशा के वृक्ष को धराशायी कर दिया है। सदैव ही मैं तेरे निकट रहा हूँ, परन्तु तू सदैव मुझसे दूर रहा है। मैंने तेरे लये अविनाशी महिमा का चयन किया है, फिर भी तूने अपने लिए अंतहीन लज्जा को चुना है। अभी भी समय है, लौट आ, और अपने अवसर को न गंवा।

हे धरती के पुत्र!
तू यदि मुझे चाहे, मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को न चाह; और यदि तू मेरे सौंदर्य को अपलक देखना चाहे तो अपने नेत्रों को संसार तथा उसमें जो कुछ भी है उससे मूंद ले, क्योंकि मेरी इच्छा और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की इच्छा, अग्नि और जल के समान है, एक ही ह्रदय में एक साथ नहीं रह सकते।

हे मित्रवत अपरिचित!
तेरे ह्रदय के दीप को मेरी शक्ति के हस्त ने प्रदीप्त किया है, अहम् एवं वासना के विरोधी झोकों से उसे न बुझा। तेरे समस्त रोगों का उपचार मेरा स्मरण है, इसे न भूल। मेरे प्रेम को अपना खज़ाना बना और इसे स्वयं अपनी दृष्टि और अपने जीवन के समान ही संजो कर रख।

हे मेरी सेविका के पुत्र!
उस दयालु की जिह्वा से दिव्य रहस्य की धारा का पान कर, और दिव्य वाणि के उद्गमस्थल से विवेक के दिवानक्षत्र के अनावृत विवेक का दर्शन कर। ह्रदय की पवित्र माटी में मेरे दिव्य ज्ञान के बीज बो, और उन्हें आस्था के जल से सींच, ताकि ज्ञान और विवेक के पुष्प ह्रदय की पवित्र नगरी से ताजे और हरे भरे हो खिल उठें।

बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से

हे मनुपुत्रों! प्रभु की ज्योति और उसके धर्म का मूल उद्देश्य है मानव के हितों की रक्षा और मानवजाति के बीच एकता की भावना को बढ़ाना, उनके बीच प्रेम तथा बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करना है। इसे संघर्ष और विद्वेष, घृणा तथा शत्रुता का कारण न बनने दो। यह एक सीधा पथ है, एक सुगम और सुव्यवस्थित आधार है। इस आधार पर जो कुछ भी स्थापित किया जाएगा उसे परिवर्तन और संयोगवश कमज़ोर नहीं किया जा सकता है, न ही असंख्य सदियों की क्रांति इसके ढांचे को कमजोर कर सकती है।

मेरी वाणि के महासिंधु में गोते लगाओ ताकि इसके रहस्यों का पता लगा सको और इसकी अटल गहराई में बिछे विवेकरूपी मोतियों को पा सको। ध्यान से सुनो, इस प्रभुधर्म के सत्य को अंगीकार करने के अपने निश्चय से तुम क्षणमात्र के लिए भी नहीं डिगो। वह धर्म जिसके द्वारा ईश्वर की शक्ति प्रकट हुई है और उसकी सत्ता स्थापित हुई है। प्रसन्नतापूर्वक तुम उसके निकट पहुँचने की शीघ्रता करो। यह प्रभुधर्म अपरिवर्तनीय है, भूतकाल में शाश्वत था, भविष्य में भी शाश्वत रहेगा। जो इसकी इच्छा करे, उसे इसे पाने दो और

जो इसे नकारे तो यह जान लो कि प्रभु स्वयंभू में है और अपनी सृष्टि पर निर्भरता से ऊपर है।

कहो: यह वह दोषमुक्त महासंतुलन है जिसे प्रभु के महाहस्त ने धारण किया है, यह वह तुला है जिससे स्वर्ग तथा पृथ्वी के सभी लोग तोले जाते है और उनके भाग्य का निर्णय होता है, बशर्ते तुम उनमें से हो जो इस सत्य को मानते हो और पहचानते हो। कहो: इसके द्वारा निर्धनों को सम्पन्नता, ज्ञानियों को दिव्य ज्ञान का प्रकाश तथा जिज्ञासुओं को प्रभु का सानिध्य पाने की क्षमता प्राप्त हुई है। सावधान! कहीं तुम इसे पारस्परिक कलह का कारण न बना डालो। तुम पर्वत की तरह अडिग बनो और सर्वशक्तिमान, सबको प्रेम करने वाले अपने स्वामी के धर्म का पालन करो।

समृद्धि में उदार बनो और विपत्ति में कृतज्ञ बनो। अपने पडोसी के विश्वास के योग्य बनो और उसे प्रसन्नता तथा मित्रता के भाव से देखो। निर्धनों के लिए खजाना और धनवानों के लिए सचेतक बनो, अभावग्रस्तों के अभावहर्ता और प्रतिज्ञापालक बनो। तुम्हारा निर्णय न्यायपूर्ण हो और तुम्हारी वाणी में संयम हो। किसी भी मनुष्य के प्रति अन्याय मत करो और सबके प्रति विनम्रता दिखलाओ। अन्धकार में भटकने वालों के लिए दीपक के समान बनो, शोकमग्नों के

लिए आनन्द, प्यासों के लिए एक सागर और विपत्ति में पड़े हुए लोगो के लिए आश्रय बनो, अन्याय से पीड़ित लोगों के रक्षक और आश्रयदाता बनो।

ईमानदारी और सदाचारी के कारण तुम्हारे सभी कार्य औरों से अनूटे हों। अनजाने को घर का अपनापन दो, कष्टपीड़ितों के लिए शीतल मरहम, संत्रस्तों के लिए शक्ति के स्तंभ बनो। नेत्रहीनों के लिए नेत्र और पथभ्रष्टों के भटकते पांव के लिए पथदर्शी प्रकाश बनो। सत्य के मुखड़े के आभूषण, वफ़ा के माथे के मुकुट, सदाचार के मन्दिर के स्तंभ, मानवता की देह के प्राणवायु, न्याय की सेनाओं की ध्वजा, सद्गुणों के क्षितिज के जगमगाते सितारे, मानव ह्रदय की धरती के लिए ओसबिन्दु, ज्ञान के महासागर के जहाज, प्रभु की अक्षय संपदाओं के गगन के सूर्य, प्रज्ञा के मुकुट के रत्न, अपनी पीढ़ी के आकाश के प्रखर प्रकाश और विनम्रता के वृक्ष के फल बनो।

अब्दुल-बहा के लेखों से संकलन

हे तू ईश्वर की ओर अपने मुखड़े को उन्मुख करने वाले! अन्य सभी वस्तुओं की ओर से अपनी आँखें मूंद लो और उन्हें उस सर्व गरिमामय के साम्राज्य की ओर खोल। जो कुछ भी तेरी कामना है वह उसी से मांग, जो कुछ भी तेरी याचना है वह उसी से कह। अपनी एक दृष्टि से वह हज़ारों हज़ार आशाएँ देता है, अपनी एक नज़र से वह हज़ारो हज़ार असाध्य रोगों को ठीक करता है,एक इशारे से वह हर घाव पर मरहम रख देता है,एक झलक से वह हृदयों को दुःख के बंधनों से छुड़ा देता है। वह जो करता है सो करता है और हमारे पास और उपाय भी क्या है? वह अपनी इच्छानुसार कार्य करता है,उसकी जो मर्ज़ी होती है वह निर्धारित करता है। अतः तेरे लिए बेहतर यही है कि अपने सिर को समर्पण में झुका ले और अपना पूरा भरोसा उस सर्वदयालू इश्वर में रख।

उपासना और सेवा

मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है। जिस तरह हमारे शरीर को अपने समुचित विकास के लिए पोषण की आवश्यकता होती है वैसे ही अपने आध्यात्मिक जीवन और स्वास्थ्य के लिए हमें नियमित प्रार्थना की आवश्यकता होती है। प्रार्थना आत्मा का भोजन है। यह हमारे हृदयों में ईश्वर के प्रेम को प्रगाढ़ बनाती है और हमें उसके निकट लाती है।

बहाई लेखों में कहा गया है: "अस्तित्व के संसार में प्रार्थना से अधिक मधुर और कुछ भी नहीं है .... प्रार्थना और अनुनय की स्थिति सबसे आशीर्वादित अवस्था है।... यह आध्यात्मिकता, सजगता और स्वर्गिक अनुभूतियों का सृजन करती है, प्रभु-साम्राज्य के नए-नए आकर्षणों को जन्म देती है और उच्चतर प्रज्ञा के प्रति सुग्राह्यता उत्पन्न करती है।"

" प्रार्थना की स्थिति में रहने का मतलब यह नहीं है कि केवल भक्ति-भावना के क्षणों में हम पवित्र श्लोकों का उच्चारण करें, बल्कि यह कि अपने दिनभर के कार्यकलापों में भी हम परमात्मा की ओर उन्मुख रहें।